कबीर का वर्तमान समय में प्रासंगिकता

नीतिका सिंह
सहायक प्रोफ़ेसर
वोमेंस कॉलेज, समस्तीपुर
B. A. (Hons.) Part 1

हिंदी संत काव्यधारा के प्रतिनिधि कवि कबीर की अभिव्यक्ति अपने परिवेश में स्वयं भोगे हुए यथार्थ का परिणाम हैं। संतो का अनुभव उनके आँखों देखे समाज अथवा इतिहास में से गुजरते हुए संवेदनशील मनुष्य का अनुभव है।वे उपेक्षित , शोषित , बहिष्कृत अशिक्षित शास्त्र ज्ञान से रहित , किन्तु संस्कारवान रचनाकार थे , जो श्रमिक वर्ग से जुड़े हुए थे। कबीर इतिहास की विषम परिस्थितियों में जिए थे। इतिहास की उन विषम परिस्थितियों ने ही इनके व्यक्तित्व को विसंगतियों से लड़ने का साहस प्रदान किया था। चेतना और व्यवहार की निरुतर लड़ाई ने इनकी वाणी को जीवंतता एवं अर्जस्विता प्रदान की है।

आज जब आये दिन पुरातन कवियों की प्रासंगिकता का प्रश्न उठता है , तब कबीर की प्रासंगिकता का प्रश्न न उठे ऐसा कैसे हो सकता है। कबीर की प्रासंगिकता को जानने से पहले हमें प्रासंगिकता के अर्थ को जान लेना जरुरी है।

कबीर ने अपने समय को जिस दृष्टि से देखने का प्रयास किया वो आज भी प्रासंगिक हैं। जिस चुनौतियों को उस समय कबीर ने सामना किया वो आज भी समाज में व्याप्त हैं। उन्होंने समाज में व्याप्त विसंगतियों और व्यवस्था की गहरी खाई को क़रीब से देखा और भोगा । उनके द्वारा रचित काव्य इनके प्रांसगिकता का सर्वश्रेष्ठ उदाहरण हैं।

हिन्दू कहें मोहि राम पियारा, तुर्क कहें रहमाना,

आपस में दोउ लड़ी-लड़ी मुए, मरम न कोउ जाना।

आज जब हर जगह धर्म के नाम हिंसा फैलाने का कार्य हो रहा हैं, विश्व आंतकवाद का दंश झेल रहा हैं वैसे समय में कबीर के उपरोक्त दोहा काफ़ी प्रांसगिक लगता हैं। वे एक ही ईश्वर को मानते थे और कर्मकाँडों के घोर विरोधी थे। अवतार, मूर्त्ति, रोज़ा, ईद, मस्जिद, मंदिर आदि को वे नहीं मानते थे।कबीर के समय मे हिंदू जनता पर धर्मातंरण का दबाव था उन्होंने अपने दोहों मे दोनो धर्मो के कर्मकाँडों का विरोध किया और ईश्वर केवल एक है इस बात को तरह तरह से लोगों को सहज भाषा मे समझाया। उन्होंने ज्ञान से ज़्यादा महत्व प्रेम को दिया। जिसे निम्न दोहे से समझा जा सकता हैं।

पोथी पढ़ि पढ़ि जग मुआ, पंडित भया न कोय,

ढाई आखर प्रेम का, पढ़े सो पंडित होय।

निम्न दोनो दोहों मे कबीर ने हिन्दू और इस्लाम दोनो धर्मों के अंधविश्वास और खोखलेपन को बताया है। मूर्ति पूजा को निरर्थक और दिखावा मानते हुए वो कहते हैं कि इससे अच्छी तो चक्की है, कि कुछ काम तो आती है।मुल्ला के बांग लगाने का भी वह उपहास करते हैं। ये दोहे आज इसीलिए बहुत प्रासंगिक हो गये हैं क्योंकि आज धर्मों मे दिखावा बढ़ता जा रहा है, एक दूसरे को नीचा दिखाने की होड सी लगी हुई है। कट्टरपंथी आज के समय में अपने धर्मों को सर्वश्रेठ बनाने के नाम पर में लोगों में विद्धेष भावना बढ़ा रहे हैं।

पाहन पूजे हरि मिलैं, तो मैं पूजौं पहार।

वाते तो चाकी भली, पीसी खाय संसार।

कांकर पाथर जोड़िके मस्जिद ली बनाय

ता चढ़ मुल्ला बांग दे क्या बहरा हुआ ख़ुदाय।

निम्नलिखित दोहा वर्तमान समय में सबसे ज़्यादा प्रासंगिक हैं। राजनीतिक समाज और बौद्धिक समाज में सबसे ज़्यादा ये प्रवृति देखने को मिलती हैं। जब कोई व्यक्ति विरोधी की किसी बुराई की ओर इंगित करता है सामने वाला आरोप का उत्तर न देकर आरोप लगाने वाले को कटघरे मे खड़ा कर देता है।स्वस्थ आलोचना कोई स्वीकार नहीं करता, जबकि स्वस्थ आलोचना का बहुत लाभ है।–

दोस पराए देखि करि, चला हसन्त हसन्त,

अपने याद न आवई, जिनका आदि न अंत।

निंदक नियरे राखिए, आँगन कुटी छवाय,

बिन पानी, साबुन बिना, निर्मल करे सुभाय।

वर्तमान समय में लोगों के बीच बात विचार में कटुता के कारण सबसे ज़्यादा हिंसा हो रही हैं। इसी तरह आरोप प्रत्यारोप लगते रहते हैं और लोग अमर्यादित भाषा बोलने लगते हैं किसी भी सभ्य समाज मे अमर्यादित भाषा और अभद्र शब्दों का प्रयोग नहीं होना चाहिये किसी भी वजहसे वाणी मे कटुता नहीं आनी चाहिये। आज हर तरफ़ नफ़रत का महौल है, क्रोध है, जिस वजह से व्यक्ति अपना संतुलन खोता जा रहा है और किसी के लिये भी कड़वे व अभद्र बोल बोल देता है।हरेक से मृदु वाणी बोलने से व्यक्ति ख़ुद भी शाँत रहता है और सुनने वाले भी शाँत हो जाते हैं। कबीर ने इसीलिए ये दोहा लिखा जो आज भी प्रासंगिक हैं-

ऐसी बानी बोलिये ,मन का आपा खोय,

औरन को सीतल करे आपहुं सीतल होय।

माला तो कर में फिरे, जीभ फिरे मुँह माहि।

मनुवाँ तो दस दिसि फिरे, यह तो सुमिरन नाही॥

उपरोक्त दोहे से हम समझ सकते है कि कबीरदास जी ने किस प्रकार धार्मिक आडंबरों पर चोट किया हैं। वे वास्तविक पूजा पर बल देते हैं। भारत में एक सर्वे हुआ था, जिसमें भारतीय समाज को हद से ज्यादा धार्मिक दिखाया गया हैं। इसके बावजूद आज हमारे जीवन मूल्य टूट रहे है। हमारी मान्यतायें मूल्यों से निर्धारित नहीं हो रही हैं। हम धार्मिक कट्टरवाद के जाल में जकड़े जा रहे हैं। हमें आज कई जगह ऐसी खबरें पढ़ने-देखने को मिलती है जिसमें दो धर्मों के समुदायों के बीच दीवार बनाने की बात आती है ऐसे में कबीर स्वत: याद आते है जिसमें कबीर ने उस जमाने में इन दोनों धर्मों को हिंदू-मुसलमान को जोड़ने की कोशिश की थी; ऐसे में जब आज हम ज्यादा आधुनिक है तो क्या कबीरदास के विचारों की जरुरत फिर से है? मतलब हम आज भी अपने अंतर में मानवीय मूल्यों को उतार नहीं पाए हैं। वास्तव में कबीरदास ने धर्म और जीवन में कोई भेद रहने नहीं दिया। जीवन की सात्त्विक अभिव्यक्ति ही धर्म है।

निष्कर्ष :- हम समझ सकते है कि कबीर के उपदेशों को आज फिर से उभारने की जरुरत हैं। समाज में समत्व की भावना लाने की जरुरत है। छूआ-छूत, उँच-नीच की भावना को एक शिक्षित समाज का गुण-तत्त्व नहीं माना जा सकता। इस सामाजिक बुराई को हटाने

की जरुरत है। धार्मिक बुराई, यथा तीर्थ-स्थान, कुर्बानी, श्राद्ध, मूर्तिपूजा, मुस्लिम धर्म में कुर्बानी, हलाल, सुन्नत इत्यादि को वे गलत मानते थे। कबीर वास्तव में एक सभ्य समाज का निर्माण चाहते थे जो आज भी हम प्रयासरत हैं। उस सभ्य समाज के निर्माण में जो कुरीतियाँ, धार्मिक आडंबर, लोभ लालच, आदि बुराइयाँ आए उसको समूल नष्ट करने का प्रयास अपने रचना के माध्यम से किया। जो आज भी हम कर रहे हैं। इसीलिए कबीर हमेशा प्रासंगिक रहेंगे।